चेहरा

मौलिक कहानी यह एक लड़की की,
जो जन्म से थी कुरूप ही,
परख की लोगों ने चेहरे से उसके,
दिल ना जीत पाई किसी का।

हर साल प्रतियोगिताएँ होती अनेक
पर निकाल देते थे उसके चेहरे को देख,
हिस्सा इनमें न ले पाती कभी
न दिखा पाई अपनी प्रतिभा भी।

एक अच्छी औरत से मुलाक़ात हुई,
दिया अवसर एक उसे नया।
सोचा सबने वह वहाँ के लायक़ नहीं,
किसी ने सहयोग का कुछ कहा भी नहीं।

चेहरे को देख उन्हें यह उम्मीद थी,
कि प्रतियोगिता में वह हारेगी,
सबने उसे अनदेखा किया,
पर न हारी वह अपना जोश वहाँ।

प्रतियोगिता हुई आरंभ जल्द ही,
और प्रतिभागियों से चयन भी,
उस लड़की के प्रदर्शन से आश्चर्य हुए सभी,
पहला इनाम दिया गया उसे ही।

शर्मिंदा थे उस लड़की से वे सब,
जिन्होंने परख चेहरे से की थी तब।
इसलिए कहाँ जाता है कि
चेहरे से पहचान होती हैं, परख नहीं।

वृतिका गर्ग
७ बी